

चिंतन

हार के लिए ईवीएम पर ठीकरा फोड़ना सही नहीं



पक्ष की राजनीति एकबार फिर दिग्भ्रामित दिखाई पड़ रही है। संसद
सत्र शुरू हुआ, तो विपक्षी दलों ने पहले दिन से ही हंगामा कर बाधा
उत्पन्न करना शुरू कर दिया, जबकि सरकार शांतिपूर्ण सत्र की
अपील करती रही है। अब विपक्ष ने विधानसभा चुनावों में मिली हार के लिए
ईवीएम को दोष देना शुरू कर दिया है। पहले भी ऐसा हुआ है। इस बार पांच राज्यों
में हुए विस चुनावों में तेलंगाना व मिजोरम में विपक्षी दलों की ही जीत हुई है,
राजस्थान व छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ही सत्ता में थी, जहां उसे हार का सामना करना
पड़ा, केवल मध्य प्रदेश में भाजपा ने एंटी इन्कम्बेन्टी से पार पाते हुए विजय पाई
है। एमपी को छोड़कर बाकी चार राज्यों में मतदाताओं ने सत्ताधारी दलों के
खिलाफ वोटिंग की और नए को मौका दिया। इसी क्रम में भाजपा को छत्तीसगढ़,
राजस्थान में जीत मिली। विपक्षी दलों को वोटिंग पैटर्न का सही से विश्लेषण
करना चाहिए। ईवीएम को विलेन बनाना छोड़ देना चाहिए। इससे पहले इसी
ईवीएम के बल पर कांग्रेस को छत्तीसगढ़, राजस्थान में सत्ता मिली थी। चूंकि हारण
को विपक्ष नहीं पचा पा रहा है, विपक्षी गठबंधन 'ईडिया' के बिखरने का खतरा
मंडरा रहा है, तो वह ईवीएम पर ठीकरा फोड़ रहा है। विपक्षी दलों को जनमत का
सम्मान करना सीखना चाहिए। अभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेशक निशाने के
बहाने, पर विपक्ष को सकारात्मक सोच अपनाने की सलाह दी है, यह विपक्षियों के
के काम की है। भारतीय ईवीएम की दुनिया भर में साख है। जब से ईवीएम से
चुनाव हो रहे हैं, तब से सभी दलों ने जीत व हार देखी है, इसलिए मशीन पर
दोषारोपण के बजाय विपक्षी दलों को अपनी राजनीति पर ध्यान केंद्रित करनी
चाहिए। कांग्रेस को देखना चाहिए कि क्या वह सहयोगी दलों को साथ लेकर
चलने की स्थिति में है? क्या कांग्रेस चुनाव प्रबंधन सही तरीके से कर पा रही है?
क्या कांग्रेस चुनावों के दौरान सही मुद्दों को जनता के सामने सही रूप में रख पा
रही है? क्या कांग्रेस 21वीं सदी में भी केवल जाति जनगणना जैसे आउटडोर्ट
मुद्दे पर अटकी हुई है? क्या कांग्रेस भविष्य के भारत के लिए कोई परिवर्तनकारी
एजेंडा पेश कर पा रही है? कांग्रेस को पहले अपनी पार्टी की एकता व एकजुटता
की समीक्षा करनी चाहिए, फिर नीति और मुद्दों की। वह चुनावों के दौरान का
क्या रही होती है, यह देखें। ईवीएम पर दोषारोपण करना जमीनी हकीकत से दूर
भागने जैसा है। चुनावों में जनता ने कांग्रेस के सभी मुद्दों की हवा निकाल दी है,
कांग्रेस को अपनी भारत जोड़ो यात्रा से भी लाभ नहीं हुआ, इसलिए इसका अब
अगले लोकसभा चुनावों में भी असर दिखेगा, इसमें संदेह है। मल्लिकार्जुन खरो
को अध्यक्ष बनाने के बाद भी कांग्रेस का हार फैसले व रणनीति के लिए राहुल
गांधी व गांधी परिवार पर निर्भर रहना बड़ी कमज़ोरी है। अब देश परिवारवाद की
राजनीति से बाहर आ रहा है, आवाम में परिवारवाद व वंशवाद की राजनीति के
प्रति चेतना जाग रही है और लोग इनके वैचारिक खोखलेपन से उब गए हैं, इस
लिए परिवारवादी, वंशवादी दलों को राजनीतिक अस्तित्व खतरे में पड़े जा रहे
हैं। विपक्षी गठबंधन 'ईडियन नेशनल डेवलपमेंट इन्क्लूसिव अलायंस' (ईडिया)
की प्रस्तावित बैठक का टलाना कांग्रेस के लिए शुभ संकेत नहीं है। इस
ईवीएम के बहाने विपक्षी दल अपनी कमियों को छिपाने का प्रयास नहीं करें,
बल्कि हार की समीक्षा करें और अपनी कमियों को पहचानें व उन्हें दूर करें।

अरविंद जयतिलक

डा . आंबेडकर ने एनिहिलिशन ऑफ कास्ट (जाति का विनाश) पुस्तक लिख कर जातिवाद मुक्त राष्ट्र के अपने सपने के विचार को सबके सामने रखा । आज जब राष्ट्र डा . आंबेडकर की पुण्यतिथि मना रहा है, तो उनके सामाजिक व राजनीतिक विचारों के वारिसों व अनुयायियों को अपने गिरेबां में झांक कर खुद से पूछना चाहिए कि उन्होंने बाबा साहेब के सपनों को साकार करने की दिशा में क्या किया है ? क्या देश आजादी के 76 साल में जातिवाद से मुक्त हो सका, क्या समाज में समता, समानता व भाईचारे की स्थापना हो सकी ? अगर नहीं, तो डा . आंबेडकर के नाम पर न किसी को राजनीति करने का हक है और न ही किसी को उनके नाम पर वैचारिक क्रांति का ढोंग करने का हक है ।

हम जो भी करेंगे वह कर्म है

‘इगोसेंट्रिक’ कर्म को वे कर्म कहते हैं। ऐसे कर्म को, जिसमें कर्ता मौजूद है। कर्ता यह विचार करके ही कर रहा है कि करने वाला मैं हूँ। जब तक मैं करने वाला हूँ, तो संन्यास लै रहा हूँ, तो संन्यास एवं कर्म हो गया। अगर मैं त्याग कर रहा हूँ, तो त्याग एक कर्म हो गया। अकर्म का मतलब है उलटा है। अकर्म का मतलब है ऐसा कर्म, जिसमें कर्ता नहीं है। जिसमें मैं कर ऐसा कोई बिंदु नहीं है। ऐसा कोई केंद्र नहीं है, जहां से यह भाव उठता है कि मैं वह हूँ। अगर मैं कर रहा हूँ, यह खो जाए, तो सभी कर्म अकर्म है। कर्ता खो जाए तो कर्म अकर्म है। इसलिए कृष्ण का काई कर्म, कर्म नहीं है, सभी अकर्म हैं। कर्म अकर्म के बीच में विकर्म की जगह है। विकर्म का अर्थ है, विशेष कर्म। विशेष किसे कहते हैं कृष्ण? जहां न कर्ता है, और न कर्म। फिर भी चीजें तो होंगी। फिर चीजें तो होंगी ही। आदमी श्वास तो लेगा ही। न कर्म है, न कर्ता है। श्वास तो लेवा श्वास कर्म तो है ही। खून तो गति करेगा ही शरीर में। भोजन तो पचेगा ही। रस पड़ेंगे? ये विकर्म हैं। ये मध्य में हैं। यहां न कर्ता है, न कर्म है। साधारण मनव्य है, संन्यासी अकर्म में है, परमात्मा विकर्म में है। वहां न कोई कर्ता है, न कोई वहां चीजें ऐसी ही हो रही हैं, जैसे श्वास चलती है। वहां चीजें बस हो रही हैं। योग का तत्व है। जो विकर्म को समझ लेगा, वह अकर्म में उत्तर जाएगा।

अंतर्गत

अब कब तक मुँह धुपाओगे !
EVM पर ठीकरा पोड़ो और
धुटटी पाजो ॥

शरतचन्द्र

कांत गोप्य

भारत ने शांति स्थापना में सधारण का किया समर्गन

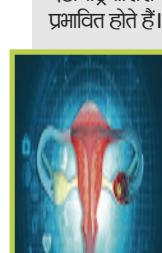
संयुक्त राष्ट्र के एक शीर्ष अधिकारी ने कहा है कि सेना और पुलिस योगदान देने वाले अग्रणी देशों में से एक, भारत ने शांति स्थापना अभियानों में सुधार के लिए संयुक्त राष्ट्र की पहल का लगातार समर्थन किया है और विश्व निकाय नवी दिल्ली को शांति स्थापना में एक प्रमुख भागीदार मानता है। शांति अभियानों के अवर महासचिव ज्यां-पियरे लैकोइक्स ने यहां 2023 संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षा मंत्रिसंघीय बैठक से पहले एक विशेष साक्षात्कार में भारत के साथ सहयोग के महत्वपूर्ण छोंकों के रूप में प्रौद्योगिकी, शांति मिशन में महिलाओं की संख्या और भूमिका में वृद्धि और 'ल्कू हेलमेट' के खिलाफ अपराध के दिनों के बढ़ेवे उल्लंघनों के बारे में बातचीज़ की।



३०८ वी

सर्वाधिक गर्भाशय से जुड़ी हीमारी से पीड़ित है महिलाएं

एंडोमेट्रियोसिस एक ऐसी बीमारी है, जिससे लगभग 10 लाख कनाडाई प्रभावित होते हैं। इसमें एंडोमेट्रियल ऊतक असामान्य रूप से बढ़कर गर्भाशय से बाहर फैलते लगते हैं। एंडोमेट्रियल ऊतक आम तौर पर मासिक धर्म के द्वैरान खत्म हो जाता है और प्रजनन में सहायता के लिए द्वैरान उत्पन्न हो जाता है। एंडोमेट्रियोसिस के द्वैरान एंडोमेट्रियल ऊतक गर्भाशय के अंदर और बाहर ढोने जोगह अत्यधिक बढ़ता है, जिससे गर्भाशय के पैत्रिकान् नामक हिस्से दब्द होता है और मासिक धर्म व गैर-मासिक धर्म के द्वैरान अत्यधिक ऐंठन, थकान होने के साथ-साथ



-दिग्विजय सिंह, कांग्रेस नेता

बाढ़ को देखकर व्यथित



सन्यान करने का लिए एक साथ आए
और लोगों के शीघ्र स्वस्थ की कामना करें।

रामायण काल की गूर्ति



रामायण काल की मूर्ति

मध्य प्रदेश में स्थित चिक्रूट का हनुगान धारा मंदिर में हनुगानजी की मूर्ति रामायण काल से है और स्वर्वर्ण है। इस मूर्ति का इतिहास आपको अचिन्तित भी करेगा और आप इस मंदिर में हनुगानजी की मूर्ति देखने के लिए श्रद्धा गाव में भी जाएं।

